ग़ज़ल -06

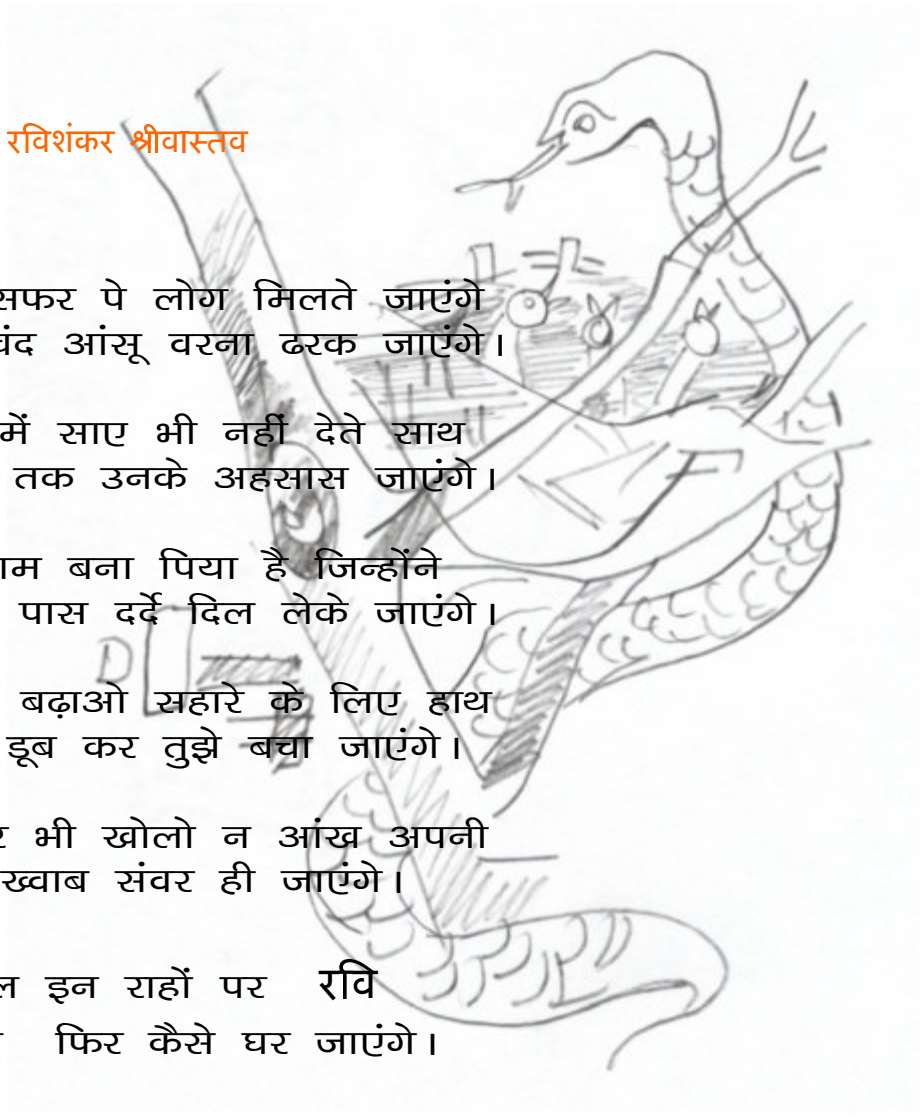

- रविशंकर श्रीवास्तव

निकलो गर सफर पे लोग मिलते जाएंगे
पोंछ लो ये चंद आंसू वरना ढरक जाएंगे।

माना अंधेरों में साए भी नहीं देते साथ
आखिरी मोड़ तक उनके अहसास जाएंगे।

अश्कों का जाम बना पिया है जिन्होंने
वे दीवाने तेरे पास दर्दे दिल लेके जाएंगे।

जब भी गिरो बढ़ाओ सहारे के लिए हाथ
वे लोग खुद डूब कर तुझे बचा जाएंगे।

सहर होने पर भी खोलो न आंख अपनी
उनके बिखरे ख्वाब संवर ही जाएंगे।

मिलेगी मंजिल इन राहों पर रवि
बाकी है जोश फिर कैसे घर जाएंगे।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001